Shri Vakratunda Ganpati Mantra

श्रीवक्रतुण्ड गणपति मंत्र साधना

Gurudev Raj Verma

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

विनियोग:- ॐ अस्य श्रीगणेशमंत्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, विघ्नेशो देवता, वं बीजम्, यं शक्तिः ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- ॐ भार्गव ऋषये नमः शिरसि। ॐ अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। ॐ विघ्नेश देवतायै नमः हृदि। ॐ वं बीजाय नमः गुह्ये। ॐ यं शक्तये नमः पादयोः। ॐ विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास :- ॐ वं नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्रं नमः तर्जनीभ्यां नमः। ॐ तुं नमः मध्यमाभ्यां नमः। ॐ डां नमः अनामिकाभ्यां नमः। ॐ यं नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ हुं नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास :- ॐ वं नमः हृदयाय नमः। ॐ क्रं नमः शिरसे स्वाहा। ॐ तुं नमः शिखायै वषट्। ॐ डां नमः कवचाय हुं। ॐ यं नमः नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ हुं नमः अस्त्राय फट्।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

वर्णन्यास :- ॐ वं नमः भ्रूमध्ये। ॐ क्रं नमः कण्ठे। ॐ तुं नमः हृदये। ॐ डां नमः नाभौ। ॐ यं नमः लिंगे। ॐ हुं नमः पादयोः।

ध्यानम् :- ॐ उद्यद्दिनेश्वररुचिं निजहस्तपद्मैः पाशांकुशाभयवरान्दधतं गजास्यम्। रक्ताम्बरं सकलदुःखहरं गणेशं ध्यायेत्प्रसन्नमखिलाभरणाभिरामम्।।

मंत्र :- 'वक्रतुण्डाय हुं।'

संक्षिप्त विधि :- पुरश्चरण में छः लाख जप करें। जप के पूर्ण होने पर अष्टद्रव्यों से दशांश होम करना चाहिये। इक्षु, सत्तू, केला, चिउड़ा, तिल, मोदक, नारियल और धान का लावा- इन्हें द्रव्याष्टक कहते हैं। इसके उपरान्त् दशांश तर्पण, मार्जन और प्रीतीपूर्वक ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये। इस विधि से मंत्र की सिद्धि होती है। मानसिक, वाचिक और शारीरिक रूप से ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए पुरश्चरण करने से महादारिद्रय दोष समाप्त होता है। चतुर्थी तिथि से चतुर्थी पर्यन्त नित्य दस हजार जप करें और प्रतिदिन एक सौ आठ आहुति प्रदान करने से छः मास के भीतर सर्व दारिद्रय दोष समाप्त होता है। घृत युक्त अन्न की आहुतियां प्रदान करने से मनुष्य धन एवं समृद्धि

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

को प्राप्त करता है। प्रतिदिन नारियल की एक हजार आहुतियां प्रदान करने से भी महालक्ष्मी का आगमन होता है। साधना सम्बन्धित अन्य आवश्यक विधान गुरुसेवा से प्राप्त करें।

श्रीवक्रतुण्डाय कवचम् :- मौलिं महेशपुत्रोऽव्याद्भालं पातु विनायकः। त्रिनेत्रः पातु मे नेत्रे शूर्पकर्णोऽवतु श्रुती।1।

हेरम्बो रक्षतु घ्राणं मुखं पातु गजाननः। जिह्वां पातु गणेशो मे कण्ठं श्रीकण्ठवल्लभः।2।

स्कन्धौ महाबलः पातुविघ्नहा पातु मे भुजौ। करौ परशुभृत्पातु हृदयं स्कन्दपूर्वजः।3।

मध्यं लम्बोदरः पातु नाभिं सिन्दूरभूषितः। जघनं पार्वतीपुत्रः सक्थिनी पातु पाशभृत्।4।

जानुनी जगतां नाथो जंघे मूषकवाहनः। पादौ पद्मासनः पातु पादाधो दैत्यदर्पहा।5।

एकदन्तोग्रतः पातु पृष्ठे पातु गणाधिपः। पार्श्वयोर्मोदकाहारो दिग्विदिक्षु च सिद्धिदः।6।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

वज्रतस्तिष्ठतो वापि जाग्रतः स्वपतोऽश्नतः। चतुर्थीवल्लभो देवः पातु मे भुक्तिमुक्तिदः।7।

फलश्रुति :- इदं पवित्रं स्तोत्रं च चतुर्थ्यां नियतः पठेत्। सिन्दूररक्तः कुसुमैर्दूर्वयापूज्यविघ्नपम्।8।

राजा राजसुतौ राजपत्नी मंत्री कुलं चलम्। तस्यावश्यं भवेद्वश्यं विघ्नराजप्रसादतः।9।

समंत्रयंत्रं यः स्तोत्रं करे संलिख्य धारयेत्। धनधान्यसमृद्धिः स्यात्तस्य नास्त्यत्र संशयः।10।

अस्य मंत्र 'ऐं क्लीं ह्रीं वक्रतुण्डाय हुं'। रसलक्षं सदैकाग्न्यः षडंगन्यासपूर्वकम्। हुत्वा तदन्ते विधिवदष्टद्रव्यं पयोघृतम्।।11।

यं यं काममभिध्यायन् कुरुते कर्म किंचन। तं तं सर्वमवाप्नोति वक्रतुण्डप्रसादतः।12।

भृगुप्रणीतं यः स्तोत्रं पठते भुवि मानवः। भवेदव्याहतैश्वर्यः स गणेशप्रसादतः।13।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

श्रीवक्रतुण्ड शतनाम स्तोत्र :- ॐ गणेश्वरो गणक्रीडो महागणपतिस्तथा। विश्वकर्ता विश्वमुखो दुर्जयो धूर्जयो जयः।1।
स्वरूपः सर्वनेत्राधिवासो वीरासनाश्रयः। योगाधिपस्तारकस्थः पुरुषो गजकर्णकः।2।

चित्रांक श्यामदशनो भालचन्द्रश्चतुर्भुजः। शम्भुतेजा यज्ञकायः सर्वात्मा सामबृंहितः।3।

कुलाचलांसो व्योमनाभिः कल्पद्रुमवनालयः। निम्ननाभिः स्थूलकुक्षिः पीनवक्षा बृहदभुजः।4।

पीनस्कन्धः कम्बुकण्ठो लम्बोष्ठो लम्बनासिकः। सर्वावयवसम्पूर्णः सर्वलक्षणलक्षितः।5।

इक्षुचापधरः शूली कान्तिकन्दलिताश्रयः। अक्षमालाधरो ज्ञानमुद्रावान् विजयावहः।6।

कामिनीकामनः काममालिनीकेलिलालितः। अमोघसिद्धिराधार आधाराधेयवर्जितः।7।

इन्दीवरदलश्याम इन्दुमण्डलनिर्मलः। कर्मसाक्षी कर्मकर्त्ता कर्माकर्मफलप्रदः।8।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

कमण्डलुधरः कल्पः कपद्र्दी कटिसूत्रभृत्। कारुण्यदेहः कपिलो गुह्यागमनिरूपितः।9।

गुहाशयो गुहाब्धिस्थो घटकुम्भो घटोधरः। पूर्णानन्दपरानन्दो धनदो धरणीधरः।10।

बृहत्तमो ब्रह्मपरो ब्रह्मण्यो ब्रह्मवित्प्रियः। भव्यो भतालयो भोगदाता चैव महात्मनः।11।

वरेण्यो वामदेवश्च वन्द्यो वज्रनिवारणः। विश्वकर्ता विश्वचक्षुर्हवनं हव्यकव्यभुक्।12।

स्वतंत्रस्सत्प संकल्पस्तथा सौभाग्यवर्द्धनः। कीर्तिदः शोकहारी च त्रिवर्गफलदायकः।13।

चर्तुर्बाहुश्चतुर्दन्तश्चतुर्थीतिसम्भवः। सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षस्सहस्रपात्।14।

कामरूपः कामगतिर्द्विरदो दीपरक्षकः। क्षेत्राधिपः क्षमाभर्ता लयस्थो लड्डुकप्रियः।15।

प्रतिवादिमुखस्तम्भो दुष्टचित्तप्रसादनः। भगवान् भक्तिसुलभो याज्ञिको याजकप्रियः।16।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

फलश्रुति :- इत्येवं देवदेवेस्य गणराजस्य धीमतः। शतमष्टोत्तरं नाम्नां सारभूतं प्रकीर्तितम्।।17।

सहस्रनाम्नाकृष्य मया प्रोक्तं स्तोत्रं मनोहरम्। ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय स्मृत्वा देवं गणेश्वरम्। पठेत्स्तोत्रमिदं भक्त्या गणराजः प्रसीदति।।18।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- *Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi*

- *Shri Baglamukhi Divya Sadhana*

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

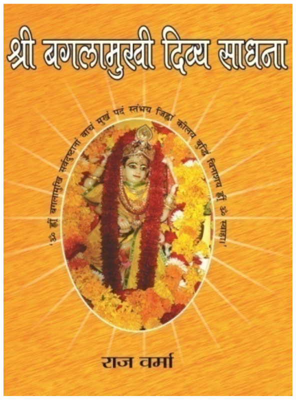

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com